नाटक पाठ योजना

समय:40मिनट **विषय हिंदी** **सत्र-2023-24**

प्रकरण : नाटक **कक्षा बारहवी**

<u>अधिगम प्रतिफल:-</u>

ज्ञानात्मक:-

- भाषा संबंधी ज्ञान प्राप्त करना।
- नाटक के मूल भावों को समझना |
- छात्र नाटक में प्रयोग होने वाली भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

बोधात्मक :-

- भाषा संबंधी तत्वों का अववोध प्राप्त करना।
- वर्तनी एवं शुद्ध शब्दों का अवबोध करना।

प्रयोगात्मक :-

- भाषा के मानक रूप को विकासित करना।
- विषय की नाटक की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करना।
- नाटक के उपयोग की अभिव्यक्ति करना।
- नाटक के महत्व को जान सकेंगे।
- अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम सीखने में वृद्धि।

4. **कौशलात्मक:**

- कौशलों का निर्माण करना।
- नाटक के अनुसार भाषा प्रयोग करना।
- नाटक की विषय वस्तु को उचित यति- गति,आरोह-अवरोह पूर्वक शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
- नाटक लिखने में सक्षम हो सकेंगे।
- रचनात्मकता में वृद्धि करना।

5. **अभिरुच्यात्मक:**

- विषय के मूल भावों केप्रति रुचि उत्पन्नकरना।
- नाटक लिखने के प्रतिरुचि उत्पन्न करना।
- छात्र हिन्दी नाटक या साहित्य को पढ़ने में रुचि ले सकेंगे।

6. **अभिवृत्यात्मक** :-

- नाटक लिखने के प्रति सकारात्मक भाव पैदा करना।
- छात्र विषय के प्रयोग एवं शब्दोंकी तुलना कर सकेंगे।

अधिगम उद्देश्य:

विद्यार्थी सीखेंगे:-

- अभिव्यक्ति के माध्यम (साहित्यिक विधा नाटक में निपुणता।
- अन्य विधाओं की मूलभूत जानकारी के साथ-साथ नाटक लिखने की सूक्ष्म तकनीकी की विस्तृत जानकारी।
- नाटक के तत्व-कथानक, समय का बन्धन, शब्द संरचना, संवाद, पात्र, पात्रों का चरित्र चित्रण आदि की विस्तृत जानकारी।

अधिगम संसाधन: चॉक, बोर्ड, शिक्षा विभागद्वारा निर्धारित पुस्तक, चार्ट, चित्र, संकेतक आदि।

अधिगमविधि: व्याख्यात्मक विधि द्वारा नाटक की संरचना के मुख्य घटकों की व्याख्या एवं विवरणात्मक विधि द्वारा विषय के सैद्धांतिक पक्षों के स्पष्टीकरण व प्रश्नावलीविधि द्वारा बीच-बीच में प्रश्न पूछे जाएंगे ।

पूर्वज्ञान:- छात्र नाटक के बारे में सामान्य जानकारी रखते हैं।

अध्यापकक्रिया:	**छात्रक्रिया:-**

प्रस्तावनाप्रश्न	उत्तर:
1. आप टेलीविजन देखते हैं? 2. टेलीविजन पर आप क्या-क्या देखते हैं? 3. नाटक में क्या देखते हो? 4. नाटक कैसे लिखा जाता है?	1. हां। 2. फिल्म, कार्टून, नाटक आदि। 3. नाटक में कई आदमी होते हैं उनकी कोई ना कोई कहानी होती है। 4. समस्यात्मक

उदेश्यकथन :-

हाँ तो बच्चों, आज हम करेंगे,"नाटक का व्याकरण", कि नाटक कैसे लिखे? कैसी भाषा का प्रयोग करें?तो आज हम यह सब सीखेंगे।

	अध्यापक क्रिया:-	**छात्रक्रिया**:-	**श्यामपट्टकार्य**	**मूल्यांकन**
आदर्श वाचन	अध्यापक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन करते हुए नाटक के बारे में बताया जाएगा कि नाटक में किन-किन तत्वों का ध्यान रखना पड़ता है।समय सीमा क्या होनी चाहिए किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। संवाद कैसे होने चाहिए। आइए तो निम्नलिखित बिंदुओं पर बात करेंगे:- नाटक लिखने का व्याकरण नाटक और अन्य विधाएँ नाटक में समय का बंधन नाटक के तत्त्व नाटक के विषय नाटक में स्वीकार एवं अस्वीकार की अवधारणा नाटक की शिल्प संरचना नाटक का तंत्र लेखक को खुद निश्चित करना पड़ता है। नाट्य-तंत्र के नियमों से मार्गदर्शन होगा, लेकिन ऐसा नहीं कि उनके पालन से ही अच्छा नाटक लिखा जा सकता है। विश्व के बहुत से अच्छे नाटक तो इन नियमों के अपवाद ही साबित होंगे। नाटक का माध्यम खून में उतर जाना चाहिए, संज्ञा पर उसकी छाप उठनी चाहिए तभी कोई लेखक अच्छा नाटक लिख सकता है। -विजय तेंदुलकर मराठी नाटककार लगातार यह प्रश्न सामने आता रहा है कि कविता कहानी, उपन्यास की तरह नाटक भी साहित्य के अंतर्गत हो आता है फिर इसकी रचना में क्या अंतर जरूरी हो जाता है। जब हम इस पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि नाटक अपनी कुछ निजी विशिष्टताओं के कारण बाकी दूसरी विधाओं से बिलकुल अलग हो जाता है। स्वयं हमारी भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्य काव्य की संज्ञा दी गई है। जहाँ से नाटक अपनी निजी एवं विशेष प्रकृति ग्रहण करता है वह है उसका लिखित रूप से दृश्यता की ओर अग्रसर हो रहा है नाटक किस प्रकार की काव्य सामग्री है जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही एक निश्चित और आदिम रूप को प्राप्त कर लेती है. वहीं एक नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी हो होता है। जब उस नाटक का मंचन हमारे	**छात्र ध्यान पूर्वक सुनेंगे।** अध्यापक के आदर्श वाचन के दौरान छात्र ध्यान पूर्वक सुनेंगे व समझेंगे। अनुकरण वाचन के	**नाटक व अन्य विधाएं** **नाटक के तत्व** **नाटक के विषय** **नाटक में स्वीकार एवं व अस्वीकार करने की अवधारणाएं।** **नाटक की शिल्प संरचना**	नाटक किस प्रकार की विधा है। नाटक के अंदर संवाद कैसे होने चाहिए?

व्याख्यात्मक विधि	सामने आता है तब जाकर उसमें संपूर्णता आती है। निष्कर्ष यह है कि साहित्य की दूसरी विधाएँ पड़ने या फिर सुनने तक को मात्रा तप करती है पर नाटक पढ़ने, सुनने के साथ-साथ देखने के तत्त्व को भी अपने भीतर समेटे हुए है। एक मूल विशेषता को हमेशा याद रखना होता है। वह 'मिडनाइट चिल्ड्रेन' को रंगमंच सब इसमें फिल्म और शैलियों की संयुक्त प्रस्तुति पाई गई है नाटक लिखते समय नाटककार को नाटक को है समय का बचना समय का यह बंधन नाटक को रचना पर अपना पूरा असर डालता है, इसीलिए एक नाटक को शुरू से लेकर अंत तक एक निश्चित समय-सीमा के भीतर पूरा होना होता है। नाटककार अगर अपनी रचना को भूतकाल में अथवा किसी और लेखक की रचना को भविष्यकाल से उठाए इन दोनों ही स्थितियों में उसे नाटक को वर्तमान काल में ही संयोजित करना होता है। यही कारण है कि नाटक के मच-निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। चाहे काल कोई भी हो उसे एक विशेष समय में एक विशेष स्थान पर वर्तमान काल में ही घटित होना होता है। जैसे किसी ऐतिहासिक या पौराणिक घटना को कहानी, उपन्यास पा कविता में उसके मूल संदर्भ में उसी काल में रखकर भी उसका पाठ किया जा सकता है पर नाटक में उसे हमारी आँखों के सामने ही एक बार फिर घटित होना होता है। समय को लेकर एक और राय यह है कि साहित्य को दूसरी विधाओं, पानी कहानी, उपन्यास या फिर कविता को हम कभी भी पढ़ते या सुनते हुए बीच में रोक सकते हैं और कुछ समय बाद फिर वहीं से शुरू कर सकते हैं पर नाटक के साथ ऐसा संभव नहीं है। एक नाटककार को यह भी सोचना जरूरी है कि दर्शक कितनी देर तक किसी कहानी को अपने सामने घटित होते देख सकता है। नाटक में किसी भी चरित्र का पूरा विकास होना भी जरूरी है। इसलिए समय का ध्यान रखना भी जरूरी हो जाता है। नाटक में तीन अंक होते हैं इसलिए उसे भी समय को ध्यान में रखकर बाँटने की जरूरत होती है। यदि हम भरत लिखित नाट्यशास्त्र को भी देखें तो उसमें भी नाटककारों से यह अपेक्षा की गई थी कि नाटक के हरेक अंक को अवधि कम से कम 48 मिनट की हो। अब दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है शब्द वैसे यह साहित्य की सभी विधाओं के लिए आवश्यक होता है। पर साहित्य को हो दो विधाओं कविता और नाटक के लिए शब्द का विशेष महत्त्व है। नाटक की दुनिया में शब्द अपना एक नयी निजी और अलग अस्मिता ग्रहण करता है। हमारे नाट्यशास्त्र में भी वाचिक अर्थात बोले जाने वाले शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है। कहानी तथा उपन्यास शब्दों के माध्यम से किसी स्थिति, वातावरण या कथानक का वर्णन करते हैं या अधिक से अधिक उसका चित्रण कर पाते हैं। अध्यापक द्वार व्याख्यात्मक रुप से समझाया अध्यापक छात्रों को निर्देश देगा की शुद्ध, स्पष्ट,यदि- गतिआरोह-अवरोह के साथ पाठ का सस्वर वाचन करें। बच्चों के सस्वर वाचन के दौरान अध्यापक बच्चों की त्रुटियों को ध्यान में रखेगा और बाद में श्यामपट्ट पर उन त्रुटियों का निवारण करेगा।	दौरान छात्र उचित यदि - गति ,आरोह-अवरोह के साथ सस्वर वाचन करेंगे। छात्र ध्यान पूर्वक सुनेंगे। **छात्र सस्वर वाचन करेंगे**	**नाटक में समय बंधन ऐतिहासिक या पौराणिक मिडनाइट चिल्ड्रेन**	नाटक कौन से काल में घटित किया जाता है? मिडनाइट चिल्ड्रन से आपका क्या अभिप्राय है?

पुनरावृति

गृहकार्य:-

1.नाटक लिखते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

2.नाटक के संवाद कैसे होने चाहिए?

3. नाटक किस प्रकार की काव्य सामग्री है?